International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 09-10-2022; Accepted: 06-10-2022; Published: 12-11-2022
Volume 8, Issue 6, 2022, Page No. 56-58

भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं का योगदान

गरिमा सिंह यादव
इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
इस आलेख में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान महिलाओं की अहम भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।1930 के दशक में महिलाएं आगे आयी तथा 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन जिसे अगस्त क्रांति भी कहा जाता है,एक ऐसा आंदोलन था जिसमें महिलाओं की भूमिका और भी व्यापक रही। लाखों स्वतंत्रता सेनानी अंग्रेजों के खिलाफ़ अंतिम सांस तक लड़ते रहे किंतु भारतीय इतिहास का यह दुर्भाग्य रहा कि हम कुछ ही वीर वीरांगनाओं की शौर्य गाथाओं को व्यापक रूप से जनमानस में प्रचारित प्रसारित कर पाए। न जाने कितने वीर वीरांगनाओं की शौर्य गाथाएं आज भी इतिहास के गर्भ में दफन है।

मूल शब्दः महिलाएं, स्वतन्त्रता संग्राम, भूमिका, समाज, भूमिगत संगठन

प्रस्तावना

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भारी संख्या में महिलाओं ने हिस्सा लिय।महिलाओं ने अपनी घरेलू कार्यों की भूमिका से जुड़े अनेक प्रतिबंधों व जिम्मेदारी से जुड़ी पारंपरिक मान्यताओं को तोड़ा व चुनौती दी। हालांकि पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं के लिए संग्राम में एक योद्धा के रूप में शामिल होना आसान कार्य नहीं था।

क्रिप्स मिशन (मार्च 1942) की असफलता के बाद, 8 अगस्त 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक वर्धा में हुई, जिसमें "भारत छोड़ो" का प्रस्ताव पारित किया गया। गाँधी जी ने जनता को संबोधित करते हुए कहा की "संपूर्ण आजादी से कम किसी भी चीज़ से मैं संतुष्ट होने वाला नहीं हूँ एक छोटा सा मंत्र, जो मैं आपको देता हूँ उसे आप अपने ह्रदय में अंकित कर सकते हैं। वह मंत्र है, करो या मरो, या तो हम भारत को आजाद कराएंगे या इस कोशिश में अपनी जान दे देंगे अपनी गुलामी का स्थायित्व देखने के लिए हम जिंदा नहीं रहेंगे।" इतिहासकार ज्ञानेंद्र पांडेय कहते हैं कि गाँधी ने इनको एक "मनोवैज्ञानिक विराम"(psychological break) प्रदान किया,इस बात पर ज़ोर देकर की सभी को अब स्वयं को 'स्वतंत्र महिला या पुरुष' मानना चाहिए यदि नेताओं को गिरफ्तार किया जाता है तो कार्यवाही का अपना तरीका चुनना चाहिए। 9 अगस्त को क्रांति का शंखनाद हो गया जब सरकार को इससे खतरा महसूस हुआ तो कांग्रेस के महत्वपूर्ण नेताओं की गिरफ्तारी 'ऑपरेशन ज़ीरो आवर' के तहत की गई। शीर्ष नेताओं की गिरफ्तारी के बाद आंदोलन नेतृत्व विहीन हो गया। परन्तु इन परिस्थितियों में आंदोलन के मुख्य नेतृत्व के अभाव में प्रांतीय व स्थानीय स्तर के नेताओं व महिलाओं ने नेतृत्व प्रदान किया क्योंकि यह गिरफ्तारी से बच गए थे। सरकार की दमनकारी प्रवृत्ति के कारण आंदोलन का भूमिगत संगठनात्मक ढांचा तैयार किया इसमें महिलाओं में अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। भूमिगत गतिविधियों की तीन धाराएं थीं जिसमें से सुधारवादी समूह का नेतृत्व जयप्रकाश नारायण तथा केंद्रीवादी समूह का नेतृत्व कांग्रेस समाजवादियों जैसे कि अरुणा आसफ अली पूरे भारत से स्वयं सेवकों को लामबंद कर रही थी तथा गाँधीवादी समूह का नेतृत्व सुचेता कृपलानी ने अहिंसक कार्यवाही तथा रचनात्मक कार्यक्रमो पर बल दिया।

इतिहासकार सुमित सरकार ने भारत छोड़ो आंदोलन को तीन स्तरों में विभाजित किया है। सुमित सरकार के अनुसार यह आंदोलन एक शहरी क्रांति के रूप में शुरू हुआ जिसके अन्तर्गत हड़ताल, बहिष्कार शामिल था, जिसे तीव्रता से दबा दिया गया तथा द्वितीय चरण में यह ग्रामीण क्षेत्रों में फैला व कृषक विद्रोह जिसमे संचार प्रणाली जैसे रेलवे लाइन, स्टेशन तथा टेलीग्राफ लाइन इत्यादि पर हमले किए गए,जो कि उपनिवेशी शासन का प्रतीक थे। तीसरे चरण की विशेषता हिंसात्मक गतिविधियाँ रही, जिसके अंतर्गत शिक्षित युवा वर्ग आतंकवादी गतिविधियों में सम्मिलित हुए। इस दौरान मुख्यतः ऊषा मेहता द्वारा संचालित व नियोजित गुप्त रेडियो स्टेशन तथा विभिन्न माध्यमों का उपयोग करके संचार प्रणालियो तथा प्रचार गतिविधियों को ध्वस्त करके, युद्ध के प्रयासो को ध्वस्त करना शामिल था।

भारत छोड़ो आंदोलन की प्रकृति कुछ स्थानों पर आंदोलन शांतिपूर्ण रहा जबकि अन्य कई स्थानों पर यह हिंसक भी हो गया। भारत छोड़ो आंदोलन का सर्वाधिक प्रभाव मुंबई, बिहार, बंगाल, ओडिशा, उत्तर प्रदेश तथा मद्रास में रहा परन्तु इसमें संपूर्ण देश की हिस्सेदारी देखने को मिलती है। दौरान संयुक्त प्रान्त (यू.पी.) के आजमगढ़, बलिया, गोरखपुर तथा बिहार के गया, भागलपुर, चंपारण, पूर्णियां तथा मुजफ्फरपुर आदि में व्यापक जन विद्रोह हुए।

भारत छोड़ो आंदोलन में विभिन्न वर्गो ने हिस्सा लिया जैसे कि सरकारी सेवक, सैनिक, कृषक, महिलाएं, छात्र, देसी रियासतों के लोग । इसमें महिलाओं ने सक्रियता से हिस्सा लिया मुख्यतः स्कूल एवं कॉलेज की छात्राओं ने। इस आंदोलन की एक अन्य विशेषता देश के कुछ हिस्सों में समानांतर राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हुई, जैसे कि बलिया,सतारा तथा बंगाल की जातिया सरकार। इस जातिया सरकार ने विद्युत वाहिनी नामक एक प्रशिक्षित स्वयंसेवी दल की स्थापना की तथा महिलाओं का भी एक स्वयंसेवी संगठन निर्मित किया गया जिसका नाम भगिनी सेना था। इन्होंने व्यापक स्तर पर राहत कार्यों का आयोजन किया तथा निर्मम दमन के बावजूद,अगस्त 1944 तक लगातार चलते रहे,जब तक गाँधी ने आंदोलन खत्म करने की घोषणा नहीं कर दी। आन्दोलन में योगदान देने वाली कुछ महिलाएं निम्नलिखित है, जिन्होंने अपने जीवन को भारत के लिए समर्पित कर दिया –

ऊषा मेहता

इन्होंने आजादी की लड़ाई में सक्रिय योगदान दिया ।भारत छोड़ो आंदोलन की घोषणा के बाद इन्होंने अपनी पढ़ाई बंद करने व

स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित होने का निर्णय लिया। 9 अगस्त 1942 को जब गाँधीजी सहित समस्त लोकप्रिय स्वतंत्रता सेनानियों को ब्रिटिश सरकार ने जेल में डाल दिया, तब ऊषा मेहता ने भूमिगत रेडियो शुरू किया व गाँधी के विचारों को प्रसारित किया। 14 अगस्त 1942 को ऊषा मेहता ने भूमिगत रेडियो की नींव रखी,इसमें अंग्रेजी व हिंदी में दैनिक रूप से जानकारी प्रसारित की जाती थी। इनको विश्वास था कि रेडियो के माध्यम से जनमानस तक विचारों का प्रसार तीव्र गति से होगा व आजादी की लड़ाई को यह निरंतरता से आगे बढ़ाएगा। आंदोलन में इन्होंने लगभग सात से आठ बार रेडियो स्टेशन बदले, प्रत्येक दो से 3 साल में गुप्त रेडियो स्टेशन की जगह बदल देती थी,ताकि ब्रिटिश सरकार इनको पकड़ न सके। इस रेडियो के माध्यम से कश्मीर से कन्याकुमारी तक जानकारी का प्रसार व्यापक स्तर पर किया गया, ताकि जनमानस को जागरूक किया जा सके।12 नवंबर 1942 को जब ऊषा मेहता गिरगांव में एक समारोह का संचालन कर रही थी,उसी दौरान उन्हें उनके सहयोगियों के साथ पकड़ लिया गया व इनकी छह महीने तक सीआईडी द्वारा पूछ्ताछ चली। इन्हें चार वर्ष की जेल की सजा मिली। 1946 में इन्हें रिहाई दी गई। ऊषा मेहता को प्रसिद्धि 1942 के आंदोलन से मिली परंतु 1928 में जब वह मात्र आठ वर्ष की थी तब इन्होंने साइमन कमीशन के विरुद्ध विरोध प्रदर्शन में हिस्सा लिया था।

हाजरा मतंगिनी

इन्हें 'गाँधी बूढ़ी' के नाम से भी जाना जाता था। महात्मा गाँधी के करो या मरो के आह्वान के बाद जब बड़े स्तर पर आंदोलन की शुरुआत हुई,तो 73 वर्षीय हजारा मतंगिनी 6000 प्रदर्शनकारियों, जिसमें अधिकतम महिलाएं थीं, उनको नेतृत्व प्रदान किया व तामलुक पुलिस स्टेशन मिदनापुर जिला की तरफ मार्च किया। इनका उद्देश्य पुलिस स्टेशन का घेराव करना था, ताकि गिरफ्तार लोगों की रिहाई की मांग की जा सके परंतु ब्रिटिश पुलिस ने यहाँ आईपीसी की धारा 144 (अवैध सभा) लगा दी परन्तु मतंगिनी हाजरा ने अपने कदम पीछे नहीं लिए व आगे बढ़ती रही। पुलिस ने गोली चलाई जो इनको आकर लग गई परंतु गोली लगने के बावजूद हाथ में तिरंगे को पकड़ते हुए व वंदे मातरम् कहती रही व धरती पर गिर गई। यह पहली स्वतंत्रता सेनानी थीं जिनकी प्रतिमा स्वतंत्र भारत के कोलकाता में स्थापित की गई।

कनकलता बारुआ

इनका जन्म बोरंगबाड़ी (असम) में हुआ था। इन्हें 'वीरबाला' नाम से भी जाना जाता है। भारत छोड़ो आंदोलन के 43वे दिन यानी 20 सितंबर 1942 को एक गुप्त सभा में तेजपुर के गोहपुर थाने पर यूनियन जैक को उतारकर तिरंगा फहराने की योजना बनाई गई। तय योजना के तहत करो या मरो, वंदे मातरम्, भारत माता की जय नारे लगाते व स्वतंत्रता सेनानियों का नेतृत्व करते हुए कनकलता बरुआ अपने हाथों में तिरंगा लिए आगे बढ़ती रही थाने में इन्हें रोकने का प्रयास किया गया परंतु ये आगे बढ़ती रहीं व इनके ऊपर गोली चलाई गई, मात्र 17 वर्ष की आयु में अपने प्राणों का बलिदान दिया। इन्होंने भारतीय गौरव के प्रतीक तिरंगे को झुकने नहीं दिया

कस्तूरबा गाँधी

यह गाँधी जी की धर्मपत्नी व उनकी सहयोगी भी थी। गाँधी जी का स्वयं का कहना था कि मैंने अहिंसा का प्रथम पाठ कस्तूरबा गाँधी से सीखा।वह बहादुरी, आत्मसंयम व समर्पण की मूर्ति थी। जब भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया तब इन्होंने गाँधी जी के स्थान पर बोलने का निर्णय लिया परंतु इन्हें भी गिरफ्तार कर लिया गया। सर्वप्रथम इन्हें मुंबई जेल में रखा गया तत्पश्चात आगा खां पैलेस पुणे में स्थानांतरित कर दिया गया, जहाँ इन्हें गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़। 23 फरवरी 1944 में इनकी मृत्यु हो गई।

अरूणा आसफ अली

अरूणा आसफ अली के योगदान की चर्चा के बगैर भारत छोड़ो आंदोलन का उल्लेख अधूरा है। इन्हें 'ग्रैंड ओल्ड लेडी' के नाम से भी संबोधित किया जाता है। अरुणा आसफ अली ने बॉम्बे के ग्वालिया टैंक में कांग्रेस का झंडा फहराया जो कि आंदोलन की शुरुआत के शंखनाद को चिन्हित करता है। इनको ब्रिटिश सरकार गिरफ्तार नहीं कर सकी क्योंकि यह भूमिगत हो चुकी थी। भूमिगत रहते हुए राम मनोहर लोहिया के साथ मासिक पत्रिका इंकलाब का संपादन किया। ब्रिटिश सरकार ने इन्हें पकड़ने के लिए ₹5000 का इनाम घोषित किया। ये ऊषा मेहता के साथ भूमिगत कांग्रेस रेडियो की स्थापना से भी जुड़ी रहीं।

सुचेता कृपलानी

सुचेता कृपलानी का समस्त स्वतंत्रता संग्राम में सबसे सक्रिय योगदान भारत भारत छोड़ो आंदोलन में रह। इन्होंने अखिल भारतीय महिला कांग्रेस की स्थापना भी की थी(1940 में)। जिसका उद्देश्य महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता व चेतना का प्रसार करना था। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जब बड़े शीर्ष नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया तो इनको, जो समूह सक्रिय थे उनके बीच समन्वय व संपर्क करके उनको अहिंसात्मक आंदोलन जारी रखने के लिए प्रोत्साहित व प्रेरित करने का मुख्य कार्य सौंपा गया। सुचेता ने एक प्रांत से दूसरे प्रांत की यात्रा की ताकि नेतृत्वकर्ताओं से संपर्क बना रहे। 1944 में इन्हें गिरफ्तार करके लखनऊ की जेल में कैद रखा गया।

भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान इन उपर्युक्त क्रांतिकारी महिलाओं के अतिरिक्त अन्य अनेक महिलाओं ने अपना असाधारण योगदान दिया जैसे कि उड़ीसा की नंदिनी देवी जिन्होंने मात्र 12 वर्ष की उम्र में जुलूस का नेतृत्व प्रदान किया तथा उन्हें ब्रिटिश सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। वहीं एक अन्य उल्लेखनीय नाम शशिबाला देवी का है, जिन्होंने भूमिगत संगठनों के द्वारा जो पर्चे जारी किए गए उनका वितरण लोगों में किया व क्रांति की मशाल को आगे बढ़ाया। तिलेश्वरी महंत एक अन्य बहादुर वीरांगना थी जिन्होंने बेहाली (असम)थाने में सफलतापूर्वक झंडा फहराय। इसी क्रम में पद्मजा नायडू का नाम भी उल्लेखनीय है जो कि सरोजनी नायडू की पुत्री थीं, इन्होंने अपनी माता के समान अपना जीवन भी राष्ट्र को समर्पित कर दिया। इन्हें भी भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान इसमें हिस्सा लेने के कारण जेल में कैद कर दिया गया था।पद्मजा नायडू ने खादी के प्रयोग को प्रोत्साहित किया व विदेशी सामान के बहिष्कार का नारा दिया।

निष्कर्ष

महात्मा गाँधी ने महिलाओं की स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि "जब भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई का इतिहास लिखा जाएगा तो भारत की महिलाओं द्वारा किया गया बलिदान सबसे प्रमुख स्थान पर होगा।"

भारत छोड़ो आंदोलन में असंख्य महिला नेताओं व स्थानीय महिलाओं ने अपनी भागीदारी दी, जिसके कारण यह आंदोलन अत्यधिक व्यापक व प्रभावशाली सिद्ध हुआ। वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने "इसे 1857 के बाद से अब तक का सबसे गंभीर विद्रोह कहा।"क्रांतिकारी महिलाओं का नाम भारतीय इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। इन महिलाओं ने भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए प्राणों की परवाह किए बगैर अपना सर्वस्व

न्योछावर कर दिया तथा सदैव सेवा व बलिदान की भावना से ओतप्रोत रही।

संदर्भ ग्रंथ

1. पी.एन.चोपडा – वुमन इन इंडियन फ्रीडम स्ट्रगल, मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन एंड सोशल वेलफेयर द्वारा प्रकाशित (1975)
2. नीरा देसाई – वुमेन इन मॉडर्न इंडिया (1977),केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ संख्या (121 से 156)
3. रविंद्र कुमार – चंपारण टू क्विट इंडिया मूवमेंट (2002),नई दिल्ली, (पृष्ठ संख्या –74)
4. सुरुचि थापर – वुमेन इन द इंडियन नेशनल मूवमेंट : अन्सीन फेसेज़ एंड अनहर्ड वॉइसेस (1930द्1942),(पृष्ठ संख्या 123 से 124)
5. सैयद जफर मोहम्मद – पिलर्स ऑफ मॉडर्न इंडिया (1757द् 1947), (पृष्ठ संख्या 81)
6. विपिन चंद्रा – भारत का स्वतंत्रता संघर्ष(1989), (पृष्ठ संख्या 439 से 452)
7. जिम मैंसेलॉस – इंडियन नैशनलिज्मरूऐन हिस्टरी (1985), (पृष्ठ संख्या 207)
8. मनमोहन कौर –वुमन इन इंडियाज़ फ्रीडम स्ट्रगल (1985), स्टर्लिंग पब्लिशर्स
9. ओ.पी.रालहन –इंडियन वुमेन थ्रो एजेस 5 वाँ वॉल्यूम,अनमोल प्रकाशन (1995), नई दिल्ली